सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - सुबोधीनता

Vibrant Pushti

' जय श्री कृष्ण "

हे दीप! खुद को इतना जलादे

जिससे मेरा मन तेजोमय हो

जिससे मेरा तन तेजोमय हो

जिससे मेरा आत्म तेजोमय हो

बाहर के अंधेरा से

जो उठा मेरे मन में अंधेरा - दोषों का

जो तडपा मेरे तन में अंधेरा - वासना का

जो लिपटा मेरे आत्म में अंधेरा - दूषण समाज का

वह दीप की हर किरण से दोषों का नाश हो

वह दीप की लऊ से वासना नष्ट हो

वह दीप की ज्योति से दुष्टता का तिरोधान हो

तो

यह दीपावली मेरी कृति हो

यह दीपावली मेरी जागृति हो

यह दीपावली मेरी संस्कृति हो

"Vibrant Pushti"

झुमो नाचो गावों

आया मंगल त्योहार

हमारे यह द्वार

मन तन आँगन दीप प्रजवलाये

मन तन आँगन साँझी पुराये

मन तन आँगन खुशी लहराये

आया मंगल त्योहार

आया मंगल त्योहार

मन में उमंग जगाय

तन में सरगम बहाय

दिल में तरंग लहराय

आया मंगल त्योहार

आया मंगल त्योहार

दीप से दीप प्रकटाये

रंग से रंग मिलाये

सूर से सूर गाये

आया मंगल त्योहार

आया मंगल त्योहार

हमारे संस्कार द्वार

हमारे जीवन द्वार

हमारे प्रीत द्वार

हमारे आँगन द्वार

"Vibrant Pushti"

बारह प्रकार के तन को

बारह प्रकार के मन को

बारह प्रकार के दिन को

बारह प्रकार के रात को

बारह प्रकार की सृष्टि को

बारह प्रकार के जीवन को

बारह प्रकार के संबंध को

बारह प्रकार के ज्ञान को

बारह प्रकार के धर्म सिद्धांत को

बारह प्रकार की प्रकृति को

बारह प्रकार की उर्मि को

बारह प्रकार की याद को

बारह प्रकार के भाव को

बारह प्रकार के आनंद को

बारह प्रकार के विरह को

बारह प्रकार के प्रीत को

बारह तरह के स्पर्श करके

खुद का घडतर करना

खुद का सिंचन करना

खुद का नियमन करना

खुद का संयम करना

खुद का बंधारण बांधना

खुद का मनन करना

खुद का चिंतन करना

खुद का सृजन करना

खुद को संस्कृत करना

खुद को शरणागत करना

खुद को समर्पित करना

खुद को सर्वज्ञ करना

यही सर्वोत्तमता है आज के सर्वोच्च पर्व का माहात्म्य।

"Vibrant Pushti"

हिन्दूस्थान ऋषि मुनियों की भूमि और संस्कृति है। हर सांप्रदायिक्ता उनसे ही प्रकट हुई है और प्रस्थापित हुई है। हर ऋषि ने अपनी आध्यात्मिकता से अपने सिद्धांत और सिद्धि को प्रमाणित करके अनोखा योगदान दिया है, जिससे हिन्दूस्थान की आत्मीय और आध्यात्मिक जडें इतनी गहराई से दटी है कि हर व्यक्ति और तत्व को मनुष्य जन्म और जीवन की गुणवत्ता और योग्यता को सामर्थ्यता और सार्थकता का सिंचन और शिक्षण प्रदान होता है।

आज यही साक्षरता पूरा हिन्दूस्थान में व्याप्त है, और हम यही रीत से खुद को शिक्षित करते है, संस्कृत करते है।

यह सच है।

तो

यह ऋषि मुनियों की धरोहर में श्री कृष्ण सर्जन हित, रचित, प्राकट्य रीत से श्री मद् गीता का मुखोध्यास क्यूँ हुआ?

"Vibrant Pushti"
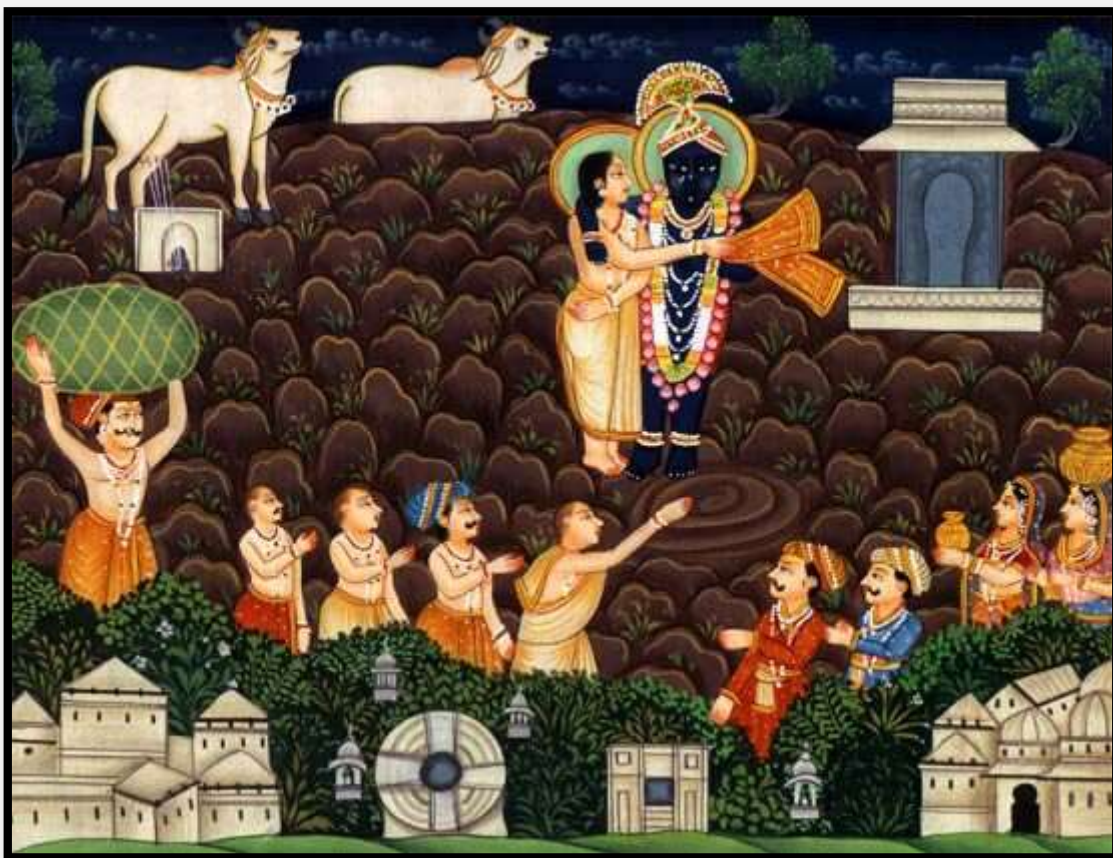
"माँ" कौन है?

किसे कहे?

"माँ" ओ माँ!

कहाँ है माँ?

माँ है मेरे अंग, अंग अंग में रंग

माँ है मेरे संग, संग संग में उमंग

माँ है मेरे आँगन,

माँ है मेरे प्राँगन,

माँ है मेरी रीत,

माँ है मेरी प्रीत,

माँ से खेले नवनीत

माँ से खेले संगीत

माँ है मेरा आँचल

माँ है मेरा सृजल

माँ है मेरी धर्मी

माँ है मेरी उर्मि

माँ है मेरी मूर्ति

माँ है मेरी धरती

माँ है मेरी दृष्टि

माँ है मेरी सृष्टि

माँ है मेरी यमुना

माँ है मेरी वंदना

ऑ माँ!

"Vibrant Pushti"

नहीं पता है पैसों की मंजिल
नहीं पता है पैसों की संगदिल
नहीं पता है पैसों की रहमत
नहीं पता है पैसों की करवट
नहीं पता है पैसों की कहानी
नहीं पता है पैसों की जवानी
नहीं पता है पैसों की किस्मत
नहीं पता है पैसों की हकीकत
नहीं पता है पैसों की दुनिया
नहीं पता है पैसों की सैया
नहीं पता है पैसों की मजबूरी
नहीं पता है पैसों की सबूरी
नहीं पता है पैसों की लूट
नहीं पता है पैसों की जूठ
नहीं पता है पैसों की जरूरत
नहीं पता है पैसों की नफरत
नहीं पता है पैसों की रिमझिम
नहीं पता है पैसों की सरगम
नहीं पता है पैसों की रीत
नहीं पता है पैसों की प्रीत
है एक वादा जिससे
जो निभाना है केवल खुद के समर्पण से
"Vibrant Pushti"

संसार समझने से पहलें

जगत समझने से पहलें

था मेरे साथ माता पिता

था मेरे साथ भाई बहन

था मेरे साथ दोस्त मित्र

समझता चलता गया

समझता बढता गया

आया मेरे साथ स्वार्थ

आया मेरे साथ जूठ

आया मेरे साथ कपट

खेलता गया प्रकृति के साथ

खेलता गया संस्कृति के साथ

पास पाया अंधाधुंध

पास पाया झंझावात

पास पाया निष्ठुरता

खुद को संभालता गया

खुद को संरक्षता गया

खोया सारा बंधन

खोया सारा रिश्ता

खोया सारा संबंध

अकेला अकेला होने लगा

अकेला अकेला खोने लगा

जो न था मेरा समझने लगा

जो न लेना था वह छोडने लगा

जो न देना था वह संभालने लगा

आखिर पा लिया

आखिर पहचान लिया

न है कोई मेरा न हूँ मैं किसीका

न है कुछ मेरा न कुछ हूँ किसीका

न है कहीं रीत न जीत है किसीकी

है तो है मेरा मैं, मैं ही हूँ सिर्फ अकेला

यही ही है सत्य जन्म संसार जगत प्रकृति की

"Vibrant Pushti"

यह जग ऐसा यह जन्म ऐसा जो सब छूटा जाय

धरम धरम की साक्षरता पर जो सब भूसाता जाय

साँस साँस की हर गति पर जो सब छूटा जाय

नैन नैन की हर द्रष्टि पर जो सब अदृष्य होता जाय

अधर अधर की गूँज पर जो सब तूटता जाय

धडकन धडकन की ताल पर जो सब रुकता जाय

मन मन की मचलता पर जो सब मिटता जाय

आत्म आत्म की ज्योत पर जो सब तेज घटता जाय

यही है जन्म जीवन की घटमाळ जो सब लूटाता जाय

ओ मेरे प्रभु!

ओ मेरे अंतर यामि!

ओ मेरे स्वामी!

"Vibrant Pushti"

जाना है कहीं

कहीं तो है ही जाना

संकेत है

अवगत है

असर है

सबकुछ छोड कर जाना है

नैन झुके

होठ भिडे

नहीं कोई चैन

नहीं कोई दैन

कुछ है जो कुछ कहता है

कुछ है जो कुछ समझाता है

है अकेले

है कहीं दूर

है किसीसे अलग

है कोई भनक

अधिक शिखा

अधिक पाया

अधिक निभाया

अधिक समाया

पर

हूँ कहीं

कहीं हूँ

कोई ऐसी रीत में

कोई ऐसी कृति में

कोई ऐसी वृत्ति में

कोई ऐसी धारा में

जगत हटे

रिश्ता तुटे

बंधन छूटे

जन्म कटे

भव घटे

साथ मिटे

हे राम!

"Vibrant Pushti"

चक्र से घुमने वाली यह सृष्टि

चक्र से घुमने वाली यह धरती

चक्र से घुमने वाली यह प्रकृति

चक्र से घुमने वाली यह वृत्ति

चक्र से घुमने वाली यह रीति

चक्र से घुमने वाली यह निती

हमें कहाँ कहाँ कैसे कैसे घुमाती है

खुद को न ढूँढने वाले को

खुद को कहाँ कहाँ पहूँचाना पडता है

कहीं जन्म, कहीं जीवन

और कहीं जगत घुमना होता है

कैसी है यह कर्म की गति

जो घुमते घुमते कहीं बिछडना

जो घुमते घुमते कहीं मिलना

यही रीत है ज्ञान विज्ञान की

यही रीत है आत्मा धर्म की

घुमते रहो घुमते रहो

रहो घुम घुम के घुम

घुम घुम के स्थिर है जो

जन्म जीवन सफल है वो

"Vibrant Pushti"

"प्रार्थना"

जो क्रिया है जो

न रीत देखता है,

न स्थली देखता है,

न शब्द देखता है,

न मन देखता है,

न तन देखता है,

न भाव देखता है,

न ज्ञान देखता है,

न व्यक्ति देखता है,

न कक्षा देखता है,

न संप्रदाय देखता है,

न सिध्दांत देखता है,

न इश्वर देखता है,

न समय देखता है,

न मान्यता देखता है,

न रिश्ता देखता है,

न माध्यम देखता है,

न आत्मा देखता है।

देखता है सिर्फ विश्वास

देखता है सिर्फ समर्पणता

देखता है सिर्फ विशुद्धता

देखता है सिर्फ निर्गुणता

देखता है सिर्फ सरलता

देखता है सिर्फ निर्मलता

देखता है सिर्फ कृतज्ञता

देखता है सिर्फ शरणागतता

जो परमआत्मा को सामान्य या साधारण करके परमानंद को लूटाने प्रेरित करती है, यही आनंद के लिए परमआत्मा सदा तरसता और तडपता रहता है।

"Vibrant Pushti"

हम श्री प्रभु को प्रेम करते है
यह हम जानते है,
यह हम समझते है,
यह हम पहचानते है,
यह हम अनुभव करते है।
ओहहह!
तो
श्री प्रभु हमें प्रेम करता है
यह हम कैसे जाने?
यह हम कैसे समझें?
यह हम कैसे पहचानें?
यह हम कैसे अनुभवें?
"Vibrant Pushti"

नहीं है नैन रस बूँद बहाने को

नहीं है अधर रस स्वर बहाने को

है यह तो अलौकिक रस निहारने को

है यह तो अलौकिक रस पुकारने को

है यह रस जिसका प्रेम साँवला

नैन रस बूँद का मूल्य न्यारा

प्रीत की रीत का अंश न्यारा

जो भीगे वह आंतर मन से डूबे

है यह रस जिसका तेज निराला

अधर रस स्वर का गूँजन मधुरा

संस्कार रीत की सूर धारा

जो टंकारे वह जीवन संवारे

है यह रस जिसका ज्ञान विराला

"Vibrant Pushti"

क्यूँ रहते है सदा आशा से

क्यूँ रहते है सदा इच्छा से

क्यूँ रहते है सदा अपेक्षा से

क्यूँ रहते है सदा मदद से

क्यूँ रहते है सदा माँग से

क्यूँ रहते है सदा प्यास से

क्यूँ रहते है सदा सहाय से

क्यूँ रहते है सदा अधूरप से

क्यूँ रहते है सदा दूजोपार्जन से

क्या है हम?

क्या करते है हम?

क्या पा रहे है हम?

सच! जन्म मनुष्य जीवन का क्या पुरुषार्थ करते है हम?

ओहहहह!

"Vibrant Pushti"

तारें उगाने वालें ने कितने तारें उगायें

पौधें खिलाने वालें ने कितने पौधें खिलायें

बूँद बरसाने वालें ने कितने बूँद बरसायें

किरण फैलाने वालें ने कितना तेज फैलायें

हवा लहराने वालें ने कितनी हवा लहरायें

रंग बिखराने वालें ने कितने रंग बिखरायें

ऐसे ही

साँस देने वालें ने कितनी साँस दि

धडकन चलाने वालें ने कितनी धडकन चलायी

विचार करने वालें ने कितने विचार किये

कर्म धरने वालें ने कितने कर्म नहीं धरे

तो इतना योग्य है ही

कि

हमें भी

यही तारें,

यही पौधें

यही बूँद,

यही किरण,

यही हवा,

यही रंग

को

यही साँस,

यही धडकन,

यही विचार,

यही कर्म

से संभालना, संवारना और निभाना है।

नहीं तो

तारें तुटते जायेंगें

पौधें सुकते जायेंगें

बूँद तरस जायेगी

किरण छिप जायेंगें

हवा रुक जायेगी

रंग रहेगा ही नहीं

न समझो सब भगवान करते है!

हम सब कुछ करें और नाम उनका धरें

नहीं नहीं!

हमें ही करना है,

हमें ही संवरना है,

हमें ही निभाना है।

"Vibrant Pushti"

"दर्शन"

वाह! कितनी अलौकिक रीत है।

वाह! कितना अनोखा संस्कार है।

वाह! कितनी अदभुत कला है।

वाह! कितना योग्य आधार है।

वाह! कितनी विशुद्ध कृति है।

वाह! कितना मधुर मिलन है।

वाह! कितनी आतुर लाक्षणिकता है।

वाह! कितना सुंदर स्वरुप है।

वाह! कितनी संस्कृत वंदना है।

वाह! कितना पवित्र सन्मान है।

वाह! कितनी सर्वाधिक समर्पणता है।

वाह! कितना सर्वोत्तम साधन है।

वाह! कितना सर्वोच्च प्रियता है।

वाह! कितनी सरल साधना है।

वाह! कितना सर्वानंद स्पर्श है।

वाह! कितनी शरणागत प्रीत है।

"Vibrant Pushti"

हर धूलि में है किसीका स्पर्श

हर नजर में है किसीकी तस्वीर

हर साँस में है किसीकी ज्योति

हर पुकार में है किसीका इंतजार

हर डग में है किसीका साथ

जो हर रीत से थामता है तुम्हारा हाथ

"Vibrant Pushti"

हे राधेश्वरी !

हे प्रेमेश्वरी !

हे अमृतमयी !

हे माधुर्यभरी !

"श्री कृष्ण" अपने सखा "सुदामा" का नाम सुन कर सर्वत्र छोड कर क्यूँ दौडे?

श्री मद् भागवत कथा में यह द्रष्टांत अचूक हर भागवत कथाकार कहते है। क्यूँ?

क्यूँकि

यह सखा भाव

यह मानव जीवन

यह मनुष्य की सांसारिक परिस्थिति

यह मनुष्य और परमात्मा की निकटता

यह मनुष्य और ऐश्वर्य की तुलना

यह मनुष्य की परम श्रेष्ठ भक्ति

यह मनुष्य की दैन्यता में उदारता की अलौकिकता

यह मनुष्य का ज्ञान

यह मनुष्य की वितरागता

यह मनुष्य की ऐकात्मता

यह मनुष्य का माधुर्य

यह मनुष्य की संस्मृति

यह मनुष्य की अयाचिकता

ओहहह! मेरे वल्लभ!

ओहहह! मेरे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

"श्री कृष्ण" अपने सखा "सुदामा" का नाम सुन कर सर्वत्र छोड कर क्यूँ दौडे?

श्री मद् भागवत कथा में यह द्रष्टांत अचूक हर भागवत कथाकार कहते है। क्यूँ?

क्यूँकि

यह सखा भाव

"सखा"

सखा किसे कहते है?

सखा कौन हो सकता है?

सखा - जो समानता हो।

"श्री कृष्ण" और सुदामा जी में विसमता की ही स्वीकृति हमनें सोची, समानता ही नहीं है तो सखा कैसे?

तो भी हम उन्हें सखा मानते है और समझते है। क्यूँ?

मान्यता!

जगत मानता है तो हम भी क्यूँ नहीं माने!

नहीं नहीं!

बात जगत की नहीं, शास्त्र मानते है, प्रज्ञानी मानते है, आत्मीय मानते है।

वह सर्वे की मापदंडता क्या है?

हमें भी

हमारा स्वभाव

हमारा धर्म

हमारा ज्ञान

हमारा जीवन से

हमें भी जानना ही है

हमें भी समझना ही है

हमें भी अपनाना ही है

कि

सखा कैसे होना है?

सखा क्यूँ और किसका होना है?

सखा की पहचान कैसे करनी है?

कैसी विडंबना है?

कैसी रीत है?

कैसी शिक्षा है?

अब समझें कि "श्री कृष्ण" और सुदामा जी में

समानता किस प्रकार की थी?

कि

हम उन्हें सखा समझें!

वार्ता करते रहते है, पर वार्ता की यथार्थता कौन समझते है?

ओहहह! मेरे वल्लभ!

ओहहह! मेरे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

"श्री कृष्ण" अपने सखा "सुदामा" का नाम सुन कर सर्वत्र छोड कर क्यूँ दौडे?

श्री मद् भागवत कथा में यह द्रष्टांत अचूक हर भागवत कथाकार कहते है। क्यूँ?

क्यूँकि

यह सखा भाव

"सखा"

सखा किसे कहते है?

सखा कौन हो सकता है?

सखा - जो समानता हो।

"श्री कृष्ण" और सुदामा जी में समानता इतनी गहराई से थी

कि

"श्री कृष्ण" उनके बिना एक पल नहीं रह सकते थे, इसलिए तो वह सुदामा जी का नाम सुन कर ही उछल पडे और दौडे।

समानता थी कर्म की

समानता थी जीवन सिद्धांत की

समानता थी ज्ञान की

समानता थी भाव की

समानता थी मनुष्य गर्व की

समानता थी मित्रता की

समानता थी योग्यता की

समानता थी आत्मीयता की

समानता थी विशुद्धता की

समानता थी श्रेष्ठता की

समानता थी संस्कार की

समानता थी व्यवहार की

समानता थी एक दूजे के लिए न्योछावरता की

समानता थी समर्पणता की

समानता थी शरणागत की

समानता थी पवित्रता की

समानता थी भक्ति की

यही समानता से तो दोनो एक दूजे के विरह में टळवळते थे।

यही टळवळता मिटाने दोनों हर एक पल आतुर थे।

इसलिए सुदामा जी "श्री कृष्ण" के द्वार पधारे और "श्री कृष्ण" नाम सुनते ही दौडे।

ओहहह! मेरे वल्लभ!

ओहहह! मेरे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

"श्री कृष्ण" और सुदामा जी में समानता इतनी गहराई से थी

कि

"श्री कृष्ण" उनके बिना एक पल नहीं रह सकते थे, इसलिए तो वह सुदामा जी का नाम सुन कर ही उछल पडे और दौडे।

समानता थी कर्म की

कर्म की समानता ऐसी थी कि

जो "श्री कृष्ण" जैसी क्रिया करें ऐसी क्रिया सुदामा जी भी करते थे।

"श्री कृष्ण" सदा भक्त स्मरण में रहते थे

सुदामा जी सदा श्री प्रभु स्मरण में रहते थे।

"श्री कृष्ण" सदा भक्ति भाव के लिए खुद को न्योछावर करते थे

सुदामा जी सदा भक्ति भाव में खुद को न्योछावर कर देते थे।

"श्री कृष्ण" ज्ञान से सत्य रुप में जीने की कला शिखाते थे

सुदामा जी ज्ञान से सत्य रुप में जीवन जीने की क्षमता रखते थे।

"श्री कृष्ण" सदा भक्त चारित्र्य क्या होता है? उसका माहत्मय लूटाते थे

सुदामा जी सदा भक्ति चारित्र्य से श्री प्रभुको लूटाते थे।

"श्री कृष्ण" सदा सत्य और भक्ति की रक्षा करते थे

सुदामा जी सदा सत्य और भक्ति के सिद्धांत निभाते थे।

"श्री कृष्ण" सदा भक्त के शरणागत है।

सुदामा जी सदा श्री प्रभु के शरणागत थे।

"श्री कृष्ण" सदा भक्त वात्सल्य है

सुदामा जी सदा भक्ति वात्सल्य थे।

यही समानता थी कर्म की

ओहहह!

इसलिए सुदामा जी के द्वार पधारे और "श्री कृष्ण" नाम सुनते ही "श्री कृष्ण" दौडे।

ओहहह! मेरे वल्लभ!

ओहहह! मेरे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

मैं बन जाऊँ "माँ" जिसके बच्चें की माँ नहीं है

मैं बन जाऊँ "माँ" जो हर वक्त पुकारें माँ

मैं बन जाऊँ "माँ" जिसके नैन ढूँढे माँ

मैं बन जाऊँ "माँ" जो तडपते नन्ही सी आत्म को मिले ममता

मैं बन जाऊँ "माँ" जो तरसते अधर को मिले जीवन

मैं बन जाऊँ "माँ" जो बिछडा हुए पाये वात्सल्य

मैं बन जाऊँ "माँ" जो भटकते हुए को मिले गृहस्थी

"माँ" माँ "माँ" माँ "माँ" माँ "माँ" माँ "माँ" माँ "माँ"

"Vibrant Pushti"

श्री कृष्ण को पूरे ब्रह्मांड की पहचान थी और वह हर तरह से निभाते थे।

जैसे श्री रुक्मणिजी उनकी पत्नी।

जैसे श्री राधाजी उनकी प्रियतमा।

जैसे श्री सुदामाजी उनके भक्त।

जैसे श्री यशोदाजी उनकी माता।

जैसे श्री अर्जुनजी उनके सखा।

जैसे श्री गौचारण उनकी क्रिया।

यह सर्वे ऐसे तत्व स्वरुप थे जो सदा श्री कृष्ण से आधि दैविक, आधि भौतिक और आधि आध्यात्मिक से एक रुप थे, जिससे ब्रह्मांड की हर गति का स्पर्श श्री कृष्ण को कराते थे।

यह हर परम तत्व की कृति और रीति इतनी अलौकिक थी कि वह भी यह परम आत्म सर्वोच्च पुरुषोत्तम को पहचानते थे।

श्री कृष्ण की पूरी लीला यही परम तत्वों के साथ और उनसे जोड कर ही संपूर्णता प्रकटायी है।

अदभुत! अदभुत! मेरे प्रिये अदभुत!

यही सर्वे तत्वों की पहचान से जीवन उत्कृष्ट करें, जीवन मधुर करें तो हम भी श्री कृष्ण के परम आत्म तत्व का स्पर्श पा सकते ही है और परमानंद लूट और लूटा सकते है।

"Vibrant Pushti"
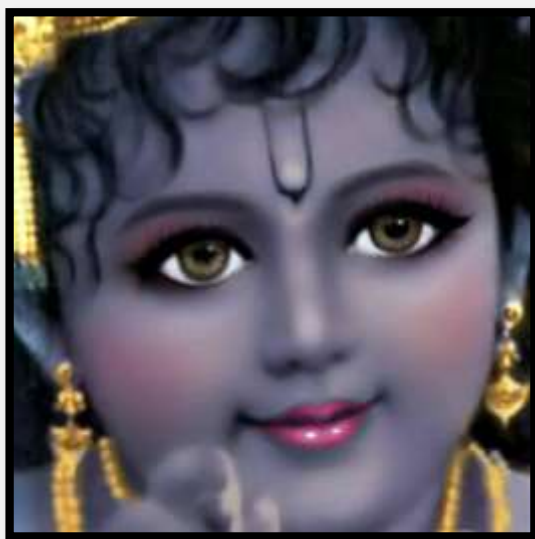
यही एक ऐसी धरती है जहां परमात्मा खुद अपने आप को लूटाने जन्म धारण करते है।
यही एक ऐसा धर्म है जहां परमात्मा खुद अपने आप को उजागर करने आते है।
यही एक ऐसी संस्कृति है जहां परमात्मा खुद अपने आप को संस्कृत करके खुद को परमात्मा धरते है।
यही एक ऐसी धरा है जहां परमात्मा अपनी प्रीत का अमृत हर जीव और तत्व को पिलाकर खुद को अमृतमय घडते जाते है।
यही एक ऐसी सृष्टि है जहां परमात्मा अपना विरह मिटाने खुदको तडपाने यह भूमि को बार बार तरसाते है, यही प्यास के बूँद को अपने आप में सिमटने भिन्न प्रकार के अवतार धर कर खुद को सेवक करते रहते है।

कौनसी है यह धरती?
कौनसा है यह धर्म?
कौनसी है यह संस्कृति?
कौनसी है यह धरा?
कौनसी है यह सृष्टि?
कैसा है यह जन्म?
कैसी है यह उजागरता?
कैसी है यह संस्कृतता - साक्षरता?
कैसी है यह प्रीत?
कैसा है यह विरह?
सच! यह कैसा स्पर्श है?
सच! यह कैसी पुष्टि है?
सच! यह कैसा मिलन है?
सच! यह कैसा माधुर्य है?

"Vibrant Pushti"

क्या है यह धर्म?

धर्म कोई संप्रदाय नहीं है।

धर्म कोई मूर्ति पूजा नहीं है।

धर्म कोई रिवाज नहीं है।

धर्म कोई मान्यता नहीं है।

धर्म कोई प्रथा नहीं है।

धर्म कोई अंधश्रद्धा नहीं है।

धर्म कोई ऐसा नहीं वैसा नहीं है।

धर्म कोई व्यवहार नहीं है।

धर्म कोई व्यक्ति नहीं है।

धर्म कोई साधन नहीं है।

धर्म कोई पाठ नहीं है।

धर्म कोई प्रणाली नहीं है।

धर्म कोई वारसाई नहीं है।

धर्म कोई संस्था नहीं है।

धर्म कोई व्यापार नहीं है।

धर्म कोई भेद नहीं है।

धर्म कोई भेट नहीं है।

धर्म कोई भिक्षा नहीं है।

धर्म कोई भिन्नता नहीं है।

धर्म कोई फल नहीं है।

धर्म कोई लेता नहीं है।

धर्म कोई लूट नहीं है।

धर्म कोई तफावत नहीं है।

धर्म कोई मान अपमान नहीं है।

धर्म कोई पहरवेश नहीं है।

धर्म कोई शक्ति नहीं है।

धर्म कोई परतंत्र नहीं है।

धर्म कोई बंधन नहीं है।

धर्म कोई शिरस्तो नहीं है।

धर्म कोई फरज नहीं है।

धर्म कोई मापतोल नहीं है।

धर्म कोई चढावा नहीं है।

धर्म कोई मूल्य नहीं है।

धर्म कोई मनुष्य नहीं है।

धर्म कोई सीमा नहीं है।

धर्म कोई किसीकी कृपा नहीं है।

धर्म कोई नसीब नहीं है।

धर्म कोई तकदीर नहीं है।

धर्म कोई लाभ नहीं है।

धर्म कोई Copy Paste नहीं है।

धर्म तो विश्वास है।

धर्म तो निष्ठा है।

धर्म तो सेवा है।

धर्म तो रिश्ता है।

धर्म तो संयम है।

धर्म तो नियम है।

धर्म तो ऐकता है।

धर्म तो शिक्षा है।

धर्म तो शिस्तता है।

धर्म तो संस्कार है।

धर्म तो नित्य है।

धर्म तो रक्षा है।

धर्म तो उत्सव है।

धर्म तो बलिदान है।

धर्म तो न्योछावर है।

धर्म तो लूटाना है।

धर्म तो व्यवस्था है।

धर्म तो समानता है।

धर्म तो जागृतता है।

धर्म तो परिवर्तन है।

धर्म तो स्वतंत्र है।

धर्म तो शुद्धता है।

धर्म तो शांति है।

धर्म तो दया है।

धर्म तो भक्ति है।

धर्म तो विद्या है।

धर्म तो भगवान है।

धर्म तो सलामती है।

धर्म तो अविरत है।

धर्म तो निर्भय है।

धर्म तो स्थिर है।

धर्म तो सदा कृपा है।

धर्म तो पहचान है।

धर्म तो प्रमाण है।

धर्म तो कर्म है।

धर्म तो ज्ञान है।

धर्म तो पवित्र है।

धर्म तो प्रार्थना है।

धर्म तो सत्य है।

धर्म तो प्रीत है।

धर्म तो खुद की उर्जा है।

"Vibrant Pushti"

जगत उजियारा सूरज करे

मेरा मन का अंधेरा कौन रोशन करे?

जगत सर्वोत्तमता प्रकृति करे

मेरे जीवन की समस्या कौन समाधान करे?

जगत पोषण धरती करे

मेरे तन का सिंचन कौन पूरण करे?

जगत संस्कृत भगवान करे

मेरे आत्म को ज्ञान कौन वर्धन करे?

जगत वात्सल्य परम आत्मा करे

मेरे आंतर भाव को प्रीत कौन सृजन करे?

"Vibrant Pushti"

असर है ऐसे व्यक्तित्व की

जो अशांत से शांत करदे

जो अशुद्ध से शुद्ध करदे

जो असमंजस से समझ करदे

जो अपकृत्य से कृतार्थ करदे

जो अघटित से सरल करदे

जो अज्ञान से ज्ञान भरदे

जो नफरत से वात्सल्य भरदे

जो अविश्वास से विश्वास भरदे

क्या हम हो सकते है ऐसे व्यक्ति?

विचारों के आदान प्रदान से तो हम भगवान से अधिक है, पर कर्म के सिद्धांत से हम ......

"Vibrant Pushti"

"ब्राह्मण"

प्रत्येक जीव के अभाव को नष्ट करें

प्रकृति भी सदा भक्ति भाव रस पायें

वैदिक ज्ञान का तेज बल सिद्धायें

जीव के हित लिए पल पल खुद का ऐश्वर्य लूटायें

साधना, श्रेष्ठता, संयम, वैराग्य को उत्सायें

वितरागता, संतुष्टि, प्रसन्नता, दिव्यता का तेज प्रकटायें

जीव के अंतकरण में शुद्ध वांछना ही जगायें

प्रत्येक परिस्थिति को सुरक्षित सजायें

धर्म की पराकाष्ठा से सिंचित करायें

प्रारब्ध को प्रसाद बना कर हर तत्वों में बटायें

श्रेष्ठ उद्यमता से सर्वे का निर्वाह करने की शिक्षा दर्शायें

हर तत्व को ब्रह्म में परिवर्तन करायें

उन्हें ब्राह्मण समझना है।

यही वंदनीय है।

यही प्राणमयी है।

यही ब्रह्ममय है।

यही आत्मीय है।

"Vibrant Pushti"

कितनी अदभुत प्रणालिका है हिन्दू संस्कृति की

हर दिन उर्मिओं का उत्सव
हर रात आराधना की कृति

हर सुबह संकल्पों की माला
हर शाम साथ मिलकर करें उजाला

हर पहली सोनेरी किरण से जगाये विधाता
हर पहली शीतलता से बहाये अमृत धारा

हर पलक उघडते खेलें कर्मो की अठखेलियाँ
हर पलक बिडते सिंचे आनंद की रंगरेलियाँ

हर पहला कदम संवारे तन मन की निर्वाहता
हर पहला मौन धरे धर्म की आराधना

यही है हिन्दू स्थान का हर सवेरा
यही है हिन्दू स्थान की हर शाम
"Vibrant Pushti"

"ब्राह्मण"

क्या जानते है यह उपाधि को?

क्या समझते है यह तत्व को?

क्या पहचानते है यह स्पर्श को?

क्या है उनका संस्कार?

क्या है उनका धर्म?

क्या है उनकी साक्षरता?

क्या है उनकी सार्थकता?

क्या है उनकी सामर्थ्यता?

क्या है उनकी विशुद्धता?

क्या है उनकी सर्वथा?

क्या है उनकी शिक्षा?

क्या है उनकी गुरुता?

क्या है उनकी पाथेयता?

क्या है उनकी दीर्घता?

क्या है उनकी द्रष्टता?

क्या है उनकी पवित्रता?

क्या है उनकी शांतता?

क्या है उनकी शीलता?

क्या है उनकी संस्कृति?

क्या है उनका जीवन?

क्या है उनकी श्रेष्ठता?

क्या है उनकी संयमता?

क्या है उनकी योग्यता?

क्या है उनकी आशीर्वाद?

क्या है उनका वचन?

क्या है उनकी सुरक्षता?

क्या है उनकी क्षमा?

क्या है उनका उपदेश?

क्या है उनका औदार्य?

क्या है ब्रह्म?

से ब्राह्मण?

समझना अति आवश्यक है।

"Vibrant Pushti"

हर कदम तेरे

मेरी माँग का पथ सिंदूर

हर नजर तेरी

मेरे तन की जीवन रक्षिता

हर साँस तेरी

मेरे धडकन की ज्योताग्नि

हर कृति तेरी

मेरी संस्कृति की साक्षर नीवं

हर विचार तेरा

मेरे जन्म का समर्पण कर्म

सच!

हे पति श्रेष्ठ!

मेरी हर अमृत धारा तेरी।

"Vibrant Pushti"

सोचना अवश्य सोचना
नहीं समझ सकता हूँ
कहीं रिश्ते कहीं बंधन
कहीं न कहीं से घूमता हूँ
कहीं न कहीं से घूमाता हूँ
जीवन की कैसी अठखेलियाँ
जो रहस्य रहें या अदृश्य रहें
कोई कुछ कहें कोई कुछ समझें
कोई कुछ सुनें कोई कुछ जतायें
ऐसे ही जीना ऐसे ही भटकना
कैसे कैसे अपनों को अपनाना
कोई रंग मंच की कठपुतली कहे
कोई जगत की परंपरा कहे
कोई कर्म का सिद्धांत कहे
कोई विधाता का विधान कहे
नहीं नहीं! नहीं है ऐसा जीवन
नहीं नहीं! नहीं है ऐसा मानव
कुछ कहो या कुछ भी कहो
कुछ न कुछ तो है यह जनम ।

"Vibrant Pushti"

क्या नहीं है मेरे पास

क्या नहीं है मेरे साथ

क्यूँ करु यह संसार से आश

क्यूँ करु यह संबंध से प्यास

मुझे मीरा होना है

मुझे श्याम होना है

तो

क्यूँ निहारते हो आसपास

क्यूँ भटकते हो द्वार द्वार

तन की वीणा

मन की बंसरी

प्रीत के सूर से धडकन पुकार लो

आत्म जागा परमात्मा पाया

न कोई पास न कोई साथ

सदा पाया प्रियतम श्रीनाथ

"Vibrant Pushti"

नहीं है देर कभी भी मुझमें

नहीं है देर कभी भी ख्याल में

नहीं है देर कभी भी रीत में

नहीं है देर कभी भी जीवन में

नहीं है देर कभी भी क्रिया में

नहीं है देर प्रीत लूटाने में

नही है देर सत्य पहचानने में

सँवारा है जीवन ऐसे योगों से

सँवारा है खुद को ऐसे संस्कार से

सँवारा है विचारों ऐसे परिस्थितीओं से

सँवारा है आसपास ऐसे माध्यमों से

सँवारा है संस्कृति ऐसे चरित्रों से

"Vibrant Pushti"

हिन्दू स्थान के संत "श्री प्रमुख स्वामी" महाराज का परम आत्म परब्रह्म में मिलन हो गया।

सच कहे

मेरा जन्म यह धरती पर हुआ और अब तक जो जीवन व्यतीत कर रहा हूँ, यह संस्कार, साक्षर और संस्कृत जीवन में केवल यही परम आत्म जीवन चरित्र का स्पर्श और माध्यम पाया।

एक परम आत्म संत मुझसे बिछड गया, मुझसे छूट गया, मुझसे दूर हो गया।

पर

सच ऐसा संत था, ऐसा परम आत्म था जो हर क्षण परमात्मा का अनुभव कराता था खुद के विचार से, खुद के कर्म से, खुद की रीत से, खुद की सेवा से।

मनुष्य जीवन में ऐसे परम आत्मीय संत की छाया परोक्ष या अपरोक्ष हम पर पडे तो हम भाग्यशाली है कि कोई तरुवर की छाया, उनके साधना की सार्थकता के सानिध्य में हम परमानंद लूट रहे है।

अब न रहे मेरे पास, मेरे साथ।

क्यूँ ऐसा हुआ?

क्यूँकि अब मुझे तरुवर होना है।

मुझे छाया रचनी है।

मुझे सार्थकता पानी है।

मुझे संसार और जगत उजागर करना है।

तो सच

ऐसे परम आत्म मेरे पास है, मेरे साथ है।

ऐसे परम आत्म मेरे विचार में है, मेरे कर्म में है।

ऐसे परम आत्म मेरी रीत में है, मेरी सार्थकता है।

यही मेरा धर्म है।

यही मेरा जीवन है।

परब्रह्म में लीन हुए यह परम आत्म को मेरी विश्वास सह अभ्यार्थनाजंली!

"Vibrant Pushti"

हरि मुख देखी भूले नैन
हरि मुख देखी भूले चैन
हरि मुख देखी भूले मन
हरि मुख देखी भूले तन
हरि मुख देखी भूले जीवन
हरि मुख देखी भूले धडकन
हरि मुख देखी भूले अगन
हरि मुख देखी भूले शयन
हरि मुख देखी भूले चमन
हरि मुख देखी भूले अमन
हरि मुख देखी केवल पाये दर्शन
लूट गये जन्मो जन्म के कर्म गहन
हो गये प्रियतम!
सदा डूब गये प्रीत विरह में हर एक क्षण
"Vibrant Pushti"

"मेरा भारत" जो है स्वर्ग से सुंदर

"मेरा भारत" जो है जगत का हृदय

"मेरा भारत" जो है कला का भंडार

"मेरा भारत" जो है धर्म का रक्षक

"मेरा भारत" जो है मानव में भाई

"मेरा भारत" जो है अनेको में एक

"मेरा भारत" जो है दर्द में दया

"मेरा भारत" जो है आत्म में परमात्मा

"मेरा भारत" जो है आफत में साथी

"मेरा भारत" जो है आनंद में उर्मि

"मेरा भारत" जो है सदा वंदनीय

जिस धरती पर मैंने जन्म लिया वह धरती से रचा देश

वह देश को मेरा सलाम

वह देश को मेरा नमन

वह देश को मेरा प्यार

वह देश को मुझसे शृंगार

वह देश को मुझसे हुंकार

वह देश को मुझसे गर्व

वह देश को मुझसे सन्मान

वह देश को मुझसे शिक्षण

वह देश को मुझसे गौरव

वह देश को मुझसे हिम्मत

वह देश को मुझसे सेवा

वह देश को मुझसे विकास

"जय हिंद "जय हिंद" "जय हिंद"

"वंदेमातरम्" वंदेमातरम्"

"Vibrant Pushti"

"मैं कहता ही हूँ कि मैं ऐसा नहीं ही कर सकता हूँ।"

बार बार यह वाक्य हम कहते है या सुनते रहते है किसीके अच्छे कार्य के लिए या किसीने अपने आपको योग्य करके सिद्ध किया हो।

क्यूँ ऐसा?

ऐसा इसलिए कि हम खुद को सुधारने ही नहीं चाहते है और खुद को संसार की सामन्य जीवन धारा में ही जीना चाहते है। इसलिए तो हमारे हर विचार, हर रीत और हर कार्य में ज्यादा प्रभाव नकारात्मकता का ही है।

कौनसी परिस्थिति?

कौनसी मजबूरी?

कौनसा संबंध?

कौनसा व्यवहार?

कौनसा समाज?

कुछ करना ही है तो खुद को ही करना है।

कुछ जगाना ही है तो खुद में ही जगाना है।

कुछ बदलना है तो खुद से ही बदलना है।

"उठो! जागो! निडरता से पकडो सत्य की राह

यही करवायेगा कुछ हमसे जो मैं ने किया ऐसा गर्व पायेगा।"

"Vibrant Pushti"

"दोस्त"

सच कहना दोस्त के लिये कोई पल या दिन हो सकता है?

किसे समझें दोस्त?

हम दोस्त हो सकते है तो हमारा दोस्त हो सकता है।

हम हर रीत से, हर परिस्थिति से, हर योग से विचार वचन, कर्म वचन और व्यवहार वचन निभा सकते है। तो दोस्त

हम तन से, मन से और धन से खुद को कुरबान कर सकते है। तो दोस्त

हम खुद्दार, हम विश्वसनीय और निडरता से जीवन की घटमाळ संवार सकते है। तो दोस्त

हम साथ साथ एक हो कर मानवीय कष्टों निर्वाण कर सकते है। तो दोस्त

"Vibrant Pushti"
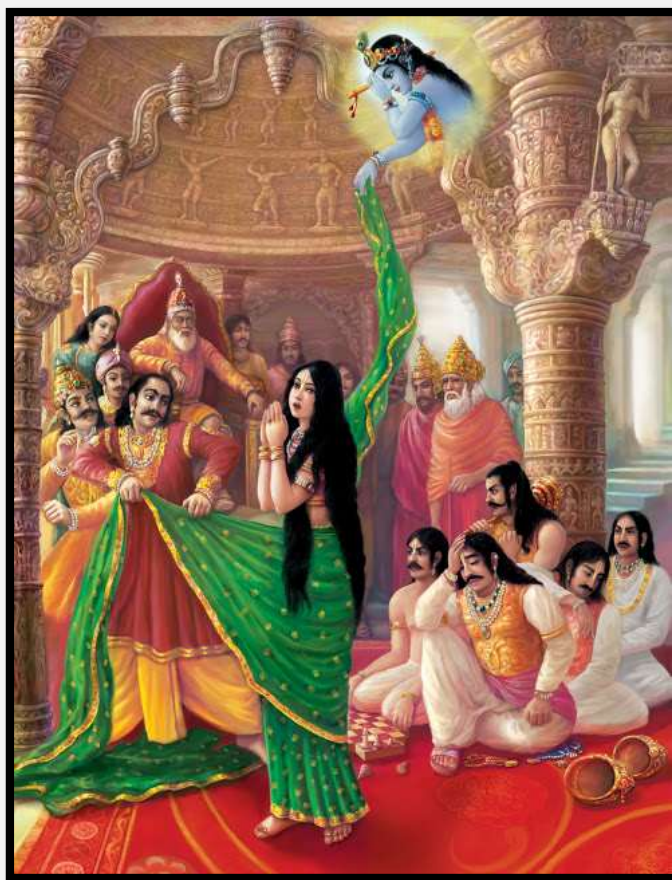
जगत की राह अटपटी

जिधर जाऊँ खुद को भूलता जाऊँ

बचपन से चलूं बुढापा तक

फिर भी कुछ ढूँढता चलूं

रुक गया तो जगत से झुक गया

चलता रहा तो कुछ छू लिया

छूते छ्ते देर तक चले

कोई छूट गया कोई बिछड गया

कोई खो गया कोई तूट गया

साथ न कोई मेरे आया

खुद अकेला चलता रहा चलता रहा

ऐसी ही राहें जो खुद से खुद को जोड रहा

"Vibrant Pushti,
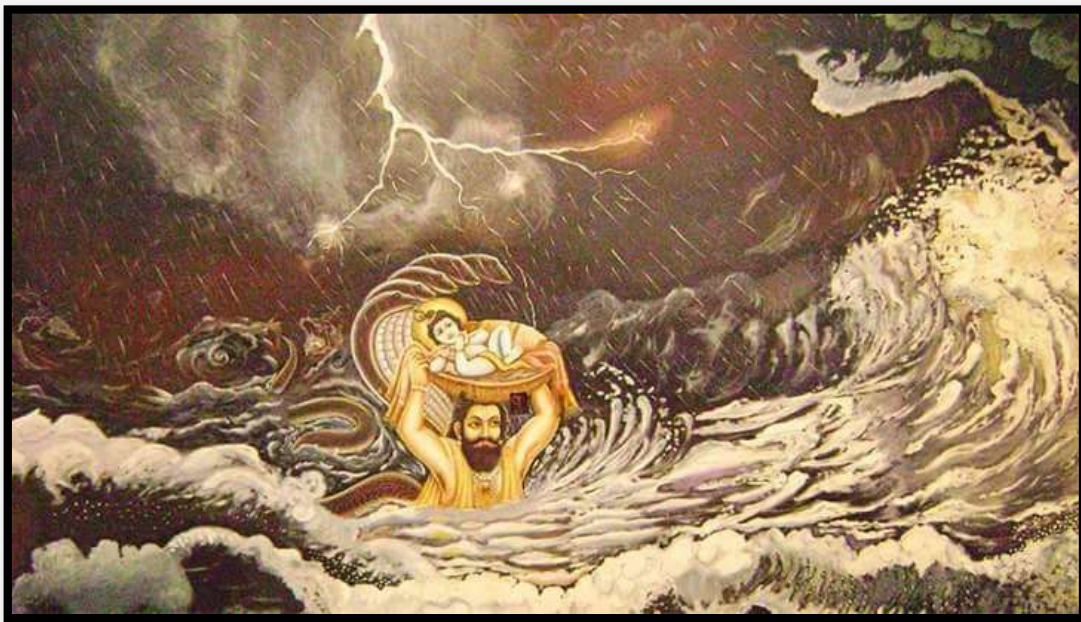
किसने देखा है कान्हा को

उनका हर रंग बिखरते है

उनका हर तरंग बहते है

उनका हर उमंग खिलते है

किसने देखा मेरी प्रियतम श्यामा को

उनकी हर प्रीत रीत प्रकटती है

उनकी हर आहट दिल में गूँजती है

उनकी हर विरह की ज्योत तन मन में उठती है

हाँ! जो प्रीत करें वो हर रीत जाने

जो पुष्टि प्रेमीने पहचानी

" Vibrant Pushti "

हे अपनी गगरी संभाल!

हे अपनी चुनरी को संभाल!

हे अपना आँचल संभाल!

हे अपने मन को संभाल!

हे अपने तन को संभाल!

हे अपने नयन संभाल!

हे अपने दिल को संभाल!

हे अपने भाव को संभाल!

हे अपनी उर्मि को संभाल!

हे अपनी साँसों को संभाल!

हे अपने अधर को संभाल!

हे अपने पैरों को संभाल!

कहीं मैं लूट न जाऊँ!

मेरी प्रीत की रीत ही ऐसी है

जो खुद लूटूँ और खुद को लूटाता जाऊँ

"Vibrant Pushti"
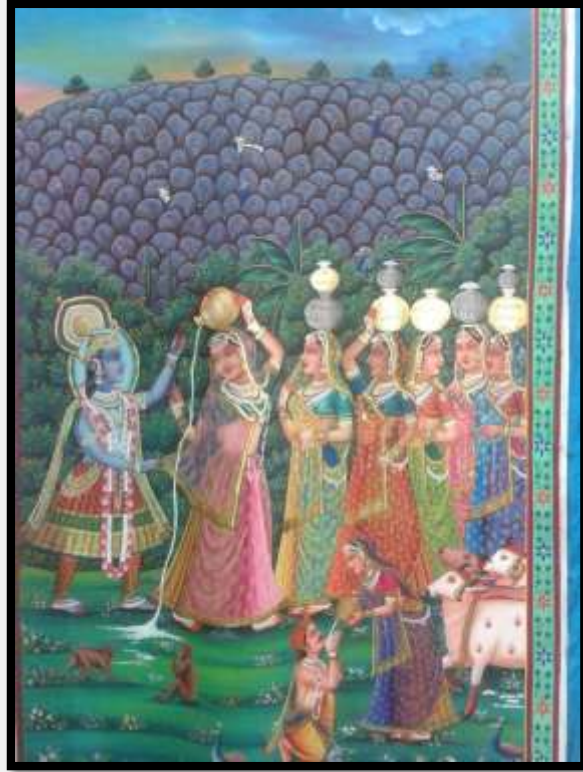
चलती ही जा रही थी
चलती ही जा रही थी
कहीओं को बिठाकर
कहीओं को उतारकर
बढती ही जा रही थी
बढती ही जा रही थी
कौन कहाँ चढे कौन कहाँ उतरे
सबको ठिकाने पहुँचा रही थी
सबको ठिकाने पहुँचा रही थी
न कोई भेद न कोई वैध
न कोई जाती न कोई ज्ञाती
सबको समाके जा रही थी
सबको संभाले जा रही थी
कोई था संगीन कोई था रंगीन
कोई था पलछिन कोई था हसीन
मुस्कुराते मुस्कुराते चली जा रही थी
लहराते लहराते चली जा रही थी
हाथ हिलाये आँसू बहाये
मुख मुस्काये मुख तरसाये
आहिस्ते आहिस्ते दौडती रही थी
आहिस्ते आहिस्ते भागती रही थी
" Vibrant Pushti "

"घर घर मिट्टी के चूल्हे"

न समझना नकारात्मक यह इतना सकारात्मक है जो जीवन मधुर कर दे, जन्म सफल कर दे।

जो एक छत के नीचे रहते है तो जितने भी जीव तत्वों है वह हर तत्व में संयुक्त की ज्योत प्रकटे, साथ साथ रहने की उमंग जागे, एक दूजे के लिए न्योछावर हो सके। यही है जीवन की सच्चाई, सर्वोत्मता, विशुद्धता, आत्मीयता, प्रीतता।

हर मिट्टी के घडे से जलती ज्योति संसार के हर अशुद्ध, अज्ञानी और स्वार्थी तत्वों को नष्ट करके मिट्टी का पवित्र दीपक जलाता है जिससे सारा जीवन तेजोमय हो जाय।

यही है सार्थकता है "घर घर मिट्टी के चूल्हे" की।

"Vibrant Pushti"

सच! कैसी है यह रीत जीवन की

बेटी बनी तो हर राह देखी पिता की

पत्नी बनी तो हर राह देखी पति की

माता बनी तो हर राह देखी पुत्र की

न राह रची खुद की

न राह चली खुद की

चलती रही यूँ चलती रही

रुकती तो कुछ न होती

कहती तो कोई न सुनते

यूँ ही चला चले जगत की राहे

मैं चला चलु एक कठपुतली ठने

कैसी है यह रीत मानव की

एक मानव मानवी न समझ सके

"Vibrant Pushti"

"निर्जला एकादशी" न इतिहास से जोडो, न कोई व्यक्तिगत से जोडो। यह एकादशी केवल खुद से जोडो और समझे तो कुछ पायेंगे।

"निर्जला" निर्जला - बिना जल, बिना रज, बिना जर, बिना चर यह दिन हमें जीना है। खुद को उजागर करना है जिससे हम कितने कृतनिश्चयी है उसकी पहचान पाएँगे । यह यज्ञ से हम हमारा जन्म को कृतार्थ करने का पथ दर्शन मिलेगा।

परम आत्मीय तत्व भीम से जुडी यह एकादशी भीषण की कृतार्थता और भीम की सार्थकता का हमारे लिए योग्य प्रमाण है। यह समझना अति आवश्यक है।

"Vibrant Pushti"

हे निर्जल !

हर नीर - हर जल के क्षीरसागर

हमारा प्रणाम स्वीकार्य हो !

इतना कह सकते है!

यह जगत में बस जी रहे है

सब से सीख रहे है

पर पता नहीं क्यों बार बार

बदलना पडता है?

सोच से

क्रिया से

नज़र से

अनुभव से

शिक्षा से

संस्कार से

आशीर्वाद से

धर्म से

वाद विवाद से

विचार विमर्श से

एकांत से

"Vibrant Pushti"

तत्व - हमारा शरीर तत्व है

हमारा जल तत्व है

हमारा अन्न तत्व है

हमारा सबकुछ तत्व है

हम जो भी देखते है

स्पर्श करते है

सब तत्व है

"Vibrant Pushti"

बूँद बूँद रज रज कण कण रंग रंग तरंग तरंग लहर लहर किरण किरण

हम तेरे है

दिल्ही से दर्शन जागे

पंजाब से पूजा जागे

आसाम से आरती जागे

मध्य प्रदेश से मनोरथ जागे

काश्मीर से कीर्तन जागे

उतराखंड से उत्सव जागे

झारखंड से झारीजी जागे

राजस्थान से रास जागे

बिहार से बुहारी जागे

महाराष्ट्र से मिसरी जागे

आप सबसे आनंद जागे

"Vibrant Pushti":

परब्रह्म के ब्रह्मांड में अनगिनत ब्रह्म है, हर ब्रह्म का खुद का ब्रह्मांड है - खुद का जगत है - खुद का जीवन है। यह जीवन के पुरुषार्थ से ही वह अपना आत्मा को परब्रह्म में परिवर्तित कर सकता है। जो हर एक जन्म से उसकी ओर गति करता है, यह गति उनके विचार, उनकी क्रिया, उनकी संस्कार सिंचन की वृत्ति, उनकी आत्मसात करने की चेतना, उनका प्रकृति के साथ का समन्वय, उनका अनेक तत्वों से स्पर्श से जागती उर्जा, उनके उत्कर्ष से जागते सूर, उनके उत्कर्ष से जागते अक्षर, उनके उत्कर्ष से जागते कर्म फल, उनके उत्कर्ष से जागती परिस्थिति, उनके उत्कर्ष से जागता संजोग, उनके उत्कर्ष से जागता परिणाम, उनके उत्कर्ष से जागती मान्यता, उनके उत्कर्ष से जागता निर्णय, उनके उत्कर्ष से जागता निर्माण, उनके उत्कर्ष से जागती सेवा, उनके उत्कर्ष से जागता धर्म और उनके उत्कर्ष से जागती उर्जा क्या क्या करती है और कर देती है?

सच! अनोखा है जगत

अनोखा है संसार

अनोखी है सृष्टि

अनोखी है प्रकृति

अनोखा है ब्रह्म

अनोखा है ब्रह्मांड

अनोखा है परब्रह्म

अनोखी है प्रीत

"Vibrant Pushti"

"मन मीत" जो आग लगाये उसे कौन बुझाये?

"अधरामृत" जो प्यास लगाये उसे कौन मिटाये?

"माझी" नाँव डूबोये उसे कौन बचाये?

"Vibrant Pushti"

कहीं नजदीकयाँ पायी थी मनुष्य जीवन की यह जगत ने

कहीं सचोटता पायी थी प्रकृति की यह सृष्टि ने

कहीं समझता पायी थी धर्म की यह मानव जाति ने

कहीं सभानता पायी थी जीवन रीत की यह जीव तत्वों ने

कहीं साक्षरता पायी थी काल की यह पुरुषार्थ आत्म तत्वों ने

कहीं मार्ग पाये थे दिशा ज्ञानी आचार्यों ने

वह योग्य परम पुरुष था, जो श्री प्रभु के अवतार में प्रस्थापित हुआ वह परम प्रेम आत्मीय "श्री बुद्ध" को दंडवत प्रणाम!

मनुष्य जीवन से "श्री प्रभु" में परिवर्तित होना यह चरित्र से शिखना, समझना और अपनाना योग्य है।

भक्त है तो भाव है

भक्त है तो ज्ञान है

भक्त है तो भगवान है

कहीं प्रकार के भक्त है

कहीं प्रकार के ज्ञान है

कहीं प्रकार के भगवान है

यह

कहीं प्रकार के भक्त से ही

कहीं प्रकार के भगवान है

यही यह मनुष्य जगत का विश्वास है

यही यह मनुष्य जगत की मान्यता है

यही रीत से जगत रहता है

यही रीत से जगत जीता है

यही रीत से जगत जानता है

यही रीत से जगत समझता है

यही रीत से जगत पहचाने जाता है

यही है यह जगत

यही है यह मनुष्य

पर

भक्त चरित्र भक्ति जगाये

भक्त चरित्र भगवान मिलाये

भक्त चरित्र भर भर सिंचे

भक्त चरित्र भरम तोडाये

भक्त चरित्र भजन शिखाये

भक्त चरित्र भोम घडाये

भक्त चरित्र भूषण बनाये

भक्त चरित्र भव भव भांगे

भक्त चरित्र भटक अटकाये

भक्त चरित्र भनक जगाये

भक्त चरित्र भाव समझाये

भक्त चरित्र भरथार मिलाये

भक्त चरित्र भरमार मारे

"Vibrant Pushti"
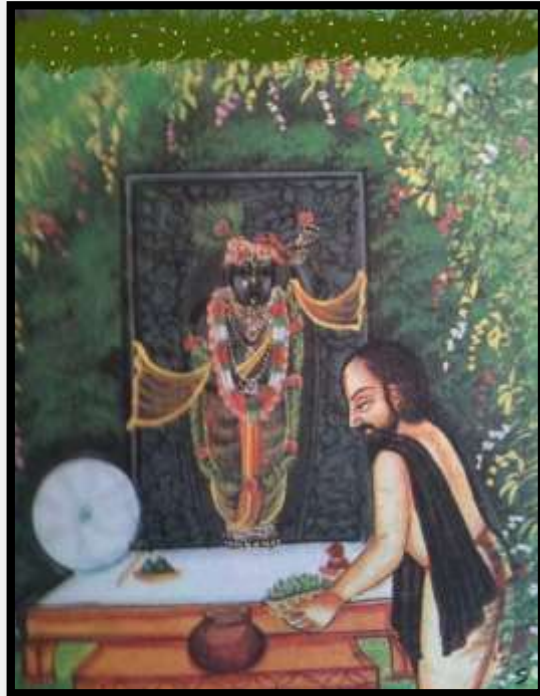
सूरत से पहचाने मुझको जमाना

मूरत से पहचाने विश्वास को जमाना

नहीं समझाये यह कैसी मिसाल

नहीं जगाये यह कैसी कमाल

हे प्रभु! तेरा मेरा कैसा है साथ

हे प्रभु! तेरा मेरा कैसा है प्यार

हे प्रभु! तेरा मेरा कैसा है बंधन

हे प्रभु! तेरा मेरा कैसा है संबंध

है प्रभु! तेरा मेरा कैसा है अंश

"Vibrant Pushti"

गंगा देखी यमुना देखी
देखी नर्मदा नदी तापी
गोदावरी देखी कृष्णा देखी
देखी कहीं नदीया आसार

हर नदी की आंतरिकता समझी
नहीं समझी बाह्य आसार

नदी पुकारे जब जब नजर पहुंचे
पर न समझ पाये हम आसार
खोती बिछडती भूलाती मैया
कैसे करके बचाये मधुर अमृतया

बूँद न समझे किनारा न समझे
न समझे हमारी संस्कृति धारा
हम मिटेंगे मिटायेंगे जीवन सारा
कभी न कहना मैया पुकारे विरह धारा

"Vibrant Pushti"

खुद को जागने के लिए क्या क्या नहीं है?

सूरज है खुद की पहचान कराने

आकाश है खुद की पहचान कराने

धरती है खुद की पहचान कराने

भक्त है खुद की पहचान कराने

माँ है खुद की पहचान कराने

गुरु है खुद की पहचान कराने

भगवान है खुद की पहचान कराने

और

पूर्णत प्रियतम है खुद की पहचान कराने

"Vibrant Pushti"

एक स्त्री एक बेटी को जन्म दे
सृष्टि की सर्वोच्च प्रकृति है

एक स्त्री एक बेटी को जन्म दे
प्रकृति का अनमोल खजाना है

एक स्त्री एक बेटी को जन्म दे
धरती की अनोखी महक है

एक स्त्री एक बेटी को जन्म दे
संस्कृति की विशुद्धता है

एक स्त्री एक बेटी को जन्म दे
संस्कार का सर्वोत्तम न्याय है

बेटी के लिए शत् शत् नमन
" Vibrant Pushti "

क्या क्या पधारते है

हमारे आँगन

क्या क्या जगाते है

हमारे मन

क्या क्या समझाते है

हमारे धर्म

कैसे कैसे संवारते है

हमारे जीवन

कौन है?

आते है वह बालक स्वरूप

आते है वह पत्नी स्वरुप

आते है वह गुरु स्वरुप

आते है वह श्री प्रभु स्वरुप

बालक पधारता है आनंद स्वरुप

पत्नी पधारती है लक्ष्मी स्वरुप

गुरु पधारते है संस्कार स्वरुप

श्री प्रभु पधारते है परमानंद स्वरुप

"Vibrant Pushti"

हे अंशी ! हम है तेरे अंश - कर दे परंहँसी !

ओहहह!

मेरे जगत में!

मेरे संसार में!

तो मैं क्या?

मैं ही सूरज हूँ।

मैं ही चंद्र हूँ।

मैं ही आकाश हूँ।

मैं ही सागर हूँ।

मैं ही अग्नि हूँ।

मैं ही धरती हूँ।

मैं ही वायु हूँ।

मैं ही संस्कृति हूँ।

मैं ही प्रकृति हूँ।

मैं ही सृष्टि हूँ।

मैं ही पुष्टि हूँ।

मैं ही सत्य हूँ।

मैं ही धर्म हूँ।

मैं ही ज्ञानी हूँ।

मैं ही भक्ति हूँ।

मैं ही कर्मवीर हूँ।

मैं ही नित्य हूँ।

मैं ही परिणाम हूँ।

मैं ही प्रीत हूँ।

मैं ही अभेद हूँ।

मैं ही समांतर हूँ।

मैं ही औषधि हूँ।

मैं ही सेवा हूँ।

मैं ही दया हूँ।

मैं ही निष्ठा हूँ।

मैं ही शिस्त हूँ।

मैं ही शिक्षा हूँ।
मैं ही संस्कार हूँ।
मैं ही निर्भय हूँ।
मैं ही निर्मल हूँ।
मैं ही सरल हूँ।
मैं ही नियम हूँ।
मैं ही संयम हूँ।
मैं ही निर्मोही हूँ।
मैं ही सत्संग हूँ।
मैं ही जप हूँ।
मैं ही यज्ञ हूँ।
मैं ही वियोग हूँ।
मैं ही मित्र हूँ।
मैं ही भागवत हूँ।

"Vibrant Pushti"

हर बार सोचता हूँ

यह जगत क्यूँ ऐसा?

यह संसार क्यूँ ऐसा?

क्यूँ! कैसा जगत है?

क्यूँ! कैसा संसार है?

सदा विषयों में डूबा हुआ।

सदा स्वार्थ वृत्ति रचता हुआ।

सदा अपने आप में खोया हुआ।

सदा पापाचार युक्त रचता हुआ।

सदा अयोग्य करता हुआ।

सदा निष्ठुर होता हुआ।

सदा जूठ बोलता हुआ।

सदा एक दूसरे को घुमाता हुआ।

सदा अविश्वास धरता हुआ।

सदा दु:ख झेलता हुआ।

सदा मुर्ख बनता हुआ।

सदा अच्छाई को मिटाता हुआ।

सदा खुद को तोडता हुआ।

सदा दूसरे को नीचा उतारता हुआ।

सदा खुद को चुमाता रहेता हुआ।

सदा कुछ न कुछ गलत करता हुआ।

सदा गंदगी करता हुआ।

सदा नफरत करता हुआ।

सदा गलत समझता हुआ।

सदा अव्यवस्था फैलाता हुआ।

सदा मार्ग भ्रष्ट करता हुआ।

सदा एक दूसरे को लूटता हुआ।

सदा खुद को मारता हुआ।

सदा गुस्सा करता हुआ।

सदा बैचेन रहता हुआ।

सदा बहाना बनाता हूआ।

सदा पाप की झोली भरता हुआ।

सदा आँसू बहाता हुआ।

सदा सबको ठगता हुआ।

सदा अयोग्य शिक्षा प्रदान करता हुआ।

सदा असत्य समझता हुआ।

सदा बाते बनाता हुआ।

सदा जीवन डराता हुआ।

सदा नफरत जगाता हुआ।

सदा खुद के लिए झझुमता हुआ।

सदा निर्वचन पुकारता हुआ।

सदा निर्वाह करता हुआ।

सदा आलस्य फैलाता हुआ।

सदा मोह माया जगाता हुआ।

सदा धन इकट्ठा करता हुआ।

सदा भविष्य की चिंता करता हुआ।

सदा साथ तोडता हुआ।

और क्या क्या नहीं!

ओहहह!

मेरे जगत में!

मेरे संसार में!

तो मैं क्या?

"Vibrant Pushti"

नहीं पता होता है ऐसे समय का जो कभी किसी पर भरोसा करके किया है

नहीँ पता होता है ऐसे वचन का जो कभी किसीको विश्वास करके किया है

नहीँ पता होता है ऐसी रीत का जो कभी किसीको मिलने से खुद लूटाते है

नहीँ पता होता है ऐसे रिश्ते का जो कभी किसीसे बिछडते ही हम बेवफा है

नहीँ पता होता है ऐसी मुस्कान का जो कभी किसीके खातिर दु:ख उठाया है

नहीँ पता होता है ऐसे जीवन का जो किसीके साथ जुडते जुडते खुद भूल जाते है

नहीँ पता होता है ऐसी साँस का जो लेने से धडकन धडकना छोड देती है

नहीँ पता होता है ऐसी घडी का जो दूसरी घडी में हम अकेले होने वाले है

सच! संसार की यह कैसी हालत की इन्सान खुद को इन्सान समझने दर दर भटकता है

"Vibrant Pushti"
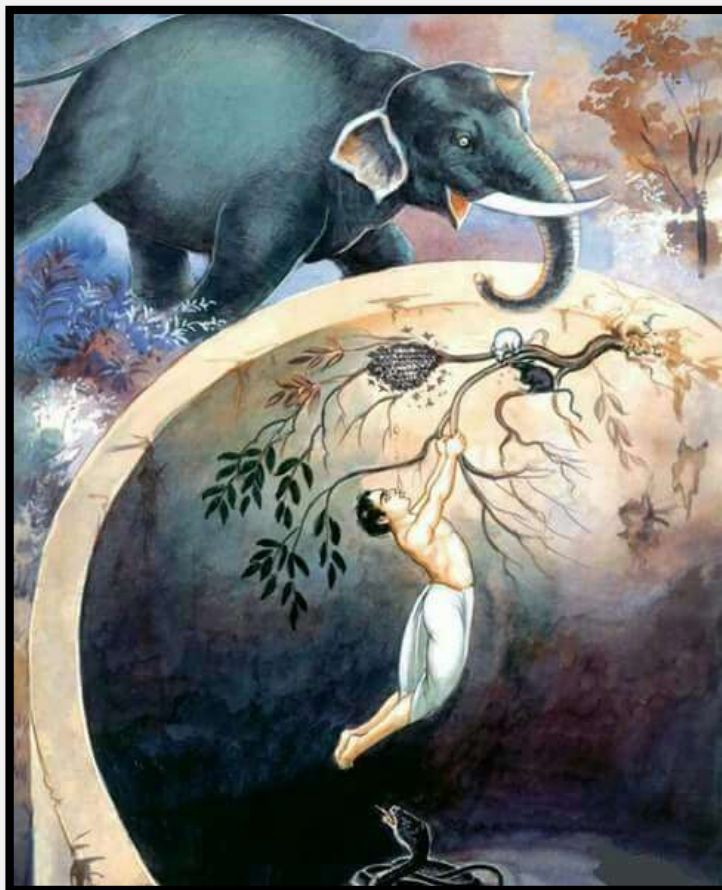
माता से संसार की बाते क्या करनी

माता तो ममता का रुप है

जो सब यह रुप पाने तरसते है

माता से संस्कार सिंचन होता है

तो ऐसी बातें और रीत जगाये जिससे संसार का जहर अमृत हो जाय।

माता से शिखते है कैसे सलामत रहना

हम छोटे थे तो कैसी कैसी परिस्थिति में हमें संभालती थी और हर रीत से ख्याल रखती थी,

तो हमें भी यह जगत की परिस्थिति में कैसा ख्याल रखना उसकी बातें और रीत शिखना।

संसार के संबंध तो है नश्वर कब छूटे कब तुटे कौन जाने पर माँ के साथ से समझा हुआ संबंध और रिश्ता निस्वार्थ और प्यार भरा रहता है, तो यह पहचानना है।

मेरी माँ!

"Vibrant Pushti"

ओहहह! उजाला करने क्या क्या नहीं है यहां

सूरज है

चंद्र है

तारे है

संस्कृति है

शिक्षा है

संस्कार है

प्रकृति है

कला है

संगीत है

गीत है

और

आत्म ज्योत है

प्रीत है

नैन है

और आखिर - हे प्रभु तेरा विरह है।

मेरे प्रियतम की विरह आग है।

जहां जहां मैं हूँ - हर जहां उजाला ही है।

जहां जहां सदा प्रीत मिलन की ज्योत है।

तो कहा है अंधेरा जीवन में?

है अंधेरा तो कैसे है?

"Vibrant Pushti"

कैसा है यह जीवन का खेला

कब क्या कैसे और क्यूँ हो जाये

कोई नहीं जाने

कैसा है यह ऋणात्मक बंधन

कब क्या कैसे और क्यूँ छूट जाये

कोई नहीं जाने

कैसा है यह जगत का रिश्ता

कब क्या कैसे और क्यूँ पलट जाये

कोई नहीं जाने

कैसा है यह धर्म को समझना

कब क्या कैसे और क्यूँ शिखा जाये

कोई नहीं जाने

कैसा है यह प्रकृति से जीना

कब क्या कैसे और क्यूँ रुठ जाये

कोई नहीं जाने

कैसा है यह सुरक्षित रहना

कब क्या कैसे और क्यूँ लूट जाये

कोई नहीं जाने

कैसी है यह जीवन की संस्कृति

कब क्या और क्यूँ डूब जाये

कोई नहीं जाने

कैसी है यह प्रीत की रीत

कब क्या कैसे और क्यूँ विश्वास तुट जाये

कोई नहीं जाने

नकारात्मकता नहीं समझना केवल जागृतता की सृष्टि जगाने यह कहा है।

कैसे भी योग संयोग और परिस्थिति आये हमें सत्य और योग्यता से निभाना है, उजागर करना है और सुरक्षित रखना है।

जिससे हर पल आनंद से उभरे।

यही हमारा जन्म पुरुषार्थ है।

"Vibrant Pushti"

सूरज को सुनने का आनंद

चंद्र को कहने का आनंद

सागर को निहालने का आनंद

आकाश को छूने का आनंद

धरती को पूछने का आनंद

वायु को नाचने का आनंद

वनस्पति को खेलने का आनंद

फूलों को अंग लगाना आनंद

पंखी को पुकारने का आनंद

पशु को पुचकार का आनंद

पर्वत को डग भरने का आनंद

सच!

यही है ब्रह्मांड।

यही है परब्रह्म!

यही है जीवन!

"Vibrant Pushti"

फलक पर जितने सितारे है

पुकारते है बार बार

धरती पर रहता है तु करता है क्या बार बार

हमने दी है जिदंगी करने कुछ सार निसार

वफा ये मोहब्बत जतायी समझे कुछ साँस निखार

डूबता रहता है विष काम मद मोह माया संसार

छू ले पुष्टि संस्कार सिंचन प्रीत अमृत सेवा धार

पंकज परिवर्तित हो जायेगा कष्ट सागर संसार

"Vibrant Pushti"

"सर्वदा सर्व भावेन भजनीयो व्रजाधिप"

ओहह! "श्री वल्लभ! कितना सरल कह दिया है!

नहीं नहीं! यह सरल नहीं यह अति आवश्यक और गूढ है।

यदि हमारे सब आचार भगवान को अर्पण करने पर भी काम, क्रोध, अभिमान, अहंकार, ममता आदि मानसिक और शारीरिक भाव पीछा नहीं छोडते है, यह भाव भी भगवान को समर्पित करना चाहिए तब ही हमारी चित्त-वृत्ति का निरोध होता है।

यह सर्वे भाव केवल और केवल प्रीत के भाव से ही होगा। यह प्रीति की अभिव्यक्ति चार प्रकार से होती है। यही चार प्रकार के भाव को भक्ति में परिवर्तित याने नाम करण किया है, जो मानव जीवन को योग्य कर सके, कर्तव्य शिल और शुद्‌ध भाव है जो मानव जन्म ले कर मृत्यु परं तक यह भाव रहना चाहिए। तब ही

"सर्वदा सर्व भावेन भजनीयो व्रजाधिप"

श्री वल्लभ" अति आवश्यक और गूढ रहस्य जता रहे है।

श्री प्रभु प्रत्ये याने जीवन में अपने माता पिता प्रत्ये

"श्री प्रभु मेरे माता पिता है - स्वामी है और मैं उनका आज्ञाकारी पुत्र याने दास हूँ। यह दास्य भाव - दास्य प्रीति - दास्य भक्ति।

श्री प्रभु मेरे आमोद प्रमोद - सुखदु:ख में मेरा साथी है। वह मेरे परम मित्र है - बंधु है जो मेरे हर योग्य अयोग्य परिस्थिति में सदा मेरे निकट है - जो सदा मुझे योग्यता प्रदान करेंगे - यही भाव मैं सदा समाज के हर जीव तत्व के लिए जगाऊँगा तो समाज के हर पहलू में सख्यता जागेगी - यही ही योग्य सख्य भाव है - सख्य प्रीत है - सख्य भक्ति है।

क्रमश आगे कल.......

श्री कुंभनदासजी अति विशुद्‌ध और सैद्‌धांतिक पुष्टि सेवक थे। वह हर क्षण अपना जीवन श्री वल्लभाचार्यजी के सिद्‌धांत और मार्गदर्शन पर करते रहते थे।

कुटुंब का निर्वाह और पुष्टि सिद्‌धांत से जीना उनकी प्राथमिकता थी।

वह सदा ध्यान में रखते थे श्री वल्लभाचार्यजी का विचार और क्रिया की गति विधि जिससे उनसे कोई दोष या कोई असैध्दांतिक क्रिया जिससे अपने श्री गुरुपरंब्रहम को अशुद्‌धता स्पर्शे।

जब जब भी सत्संग या भागवत कथा होती वह सर्वत्र ख्याल रखते।

एक बार गाँव से आया एक व्यक्ति सत्संग में बैठा था, और

उनके कर्ण से स्पर्शते हर अक्षर से वह रोमांचित होता था। धीरे धीरे वह इतना ऐकाग्र हो गया श्री वल्लभाचार्यजी की वाणी से की वह आंतरिक और बाह्यता से विशुद्‌ध होता चला। कुंभनदासजी तो यह व्यक्ति की लीला देख कर अति आनंद की अनुभूति करने लगे।

थोडा समय बाद कथा विश्राम हुई वह व्यक्ति अपने घर चल पडा। कुंभनदासजी उनकी लीला में मग्न थे। दूसरे दिन कुंभनदासजी सुबह सुबह उनके घर पहुंचे तो वह व्यक्ति अगले दिन के सत्संग रीत से गृहसेवा कर रहा था। कुंभनदासजी अचंबित हो गये, मुख से पुकार उठे - "श्री वल्लभ"

फिर वह व्यक्ति जो सेवा कर रहा था उन्हें निहारने लगे।

वह कभी श्री प्रभु को स्नान करा रहा था, कभी सामग्री धरा रहा था, कभी हस्त में रखकर नाँच रहा था तो कभी जल पीला रहा था, तो कभी सामने रखकर टुकुर टुकुर देख रहा था।

कुंभनदासजी सोचने लगे यह क्या कर रहा है? सेवा करता है या श्री प्रभुको कष्ट पहूंचा रहा है? सेवा पद्धति का ख्याल नहीं है तो सेवा किसीको पूछ कर करनी चाहिए?

सोचा - हम ही उन्हें शिखाते है।

तुरंत उनके पास पहुंच कर उन्हें सेवा रीत बताने लगे। वह व्यक्ति एक चित्त से समझ रहा था, देख रहा था पर उनके मुख पर कोई आनंद या समझने का प्रतिभाव नहीं था। कुंभनदासजी ने उन्हें समझा कर अपने घर पहुंचे।

प्रसाद ग्रहण करके वह श्री वल्लभाचार्यजी के सत्संग में पहूँचे तो देखा वह व्यक्ति उनसे पहले आकर बिराजमान था।

कुंभनदासजी ने देखा आज उनका मुखडा कुछ उदास और खोया खोया था। इतने में श्री वल्लभाचार्यजी पधारे।

सबने वंदन किया और "श्रीवल्लभ" आज्ञा से सब बैठ गए। सत्संग का आरंभ करने की शुरुआत करते ही श्री वल्लभाचार्यजी की नजर वह व्यक्ति पर आयी।

ओहहह! अचंबित हो गये! क्यूँ ऐसा हुआ? तुरंत कुभंनदासजी पर नजर पहूँची और सब समझ गये।

कुंभना! सेवा कोई रीत नहीं है, सेवा कोई व्यवहार नहीं है, सेवा कोई फरज नहीं है, सेवा कोई प्रणाली नहीं है, सेवा कोई सलाह सूचन नहीं है, सेवा कोई तफावत नहीं है, सेवा कोई ऐसी या सेवा कोई वैसी नहीं है।

सेवा तो एक शिक्षा है,

सेवा तो एक संस्कार है,

सेवा तो एक भाव है,

सेवा तो एक ज्ञान है,

सेवा तो जीवन जीने की कला है,

सेवा तो अपनी माधुर्यता जगाने का स्पंदन है,

सेवा तो एक आंतरिक ऊर्जा जगाने का व्यायाम है,

सेवा तो प्रीत है,

सेवा तो गीत है,

सेवा तो जीवन रथ है,

सेवा तो विशुद्धता जगाने की रीत है,

सेवा तो अलौकिक आनंद है,

सेवा तो जगत को एकात्म करने का साधन है।

"सर्वदा सर्व भावेन भजनीयो व्रजाधिप"

"श्री वल्लभाचार्यजी" ने अति आवश्यक और सूक्ष्मता से यह समझ जगायी है की हमारा जीवन सदा उत्कृष्ट हो।

ज्ञान और भक्ति की जो समझ कर रहे है वह मानव जीवन के लिए सर्वोत्तम है। दास्य भक्ति - सख्य भक्ति की रीत हमें स्पर्शायी अब क्रमश आगे -

वात्सल्य भक्ति - श्री प्रभु हमारी संस्कृति प्रमाणित प्रथम बाल स्वरुप है। "श्री वल्लभाचार्यजी" ने बाल स्वरूप से ही पुष्टि मार्ग विजयी किया है। क्यूँ?

हमारी संस्कृति में हर बालक श्री प्रभु समकक्ष है। क्यूँकी

बालक निर्दोष है।

बालक सरल है।

बालक निर्मल है।

बालक समातंर है।

बालक न्योछावर है।

बालक निष्कपट है।

बालक निर्लेप है।

बालक एक ही समझ - एक ही भाषा - एक ही प्रीत रीत - केवल समान्य याने सर्व मान्य।

केवल आनंद!

न द्वेष - न स्वार्थ - न रमत - न असंतुष्ट

केवल मासूमता!

हर उर्मिओं में प्यार

हर अदा में एकरार

हर लीला में मधुरता

हर स्पर्श में दुलार

हर पुकार में एतबार

हे माँ!

हे तात!

धात्री - ध्राता

और बालक

माता पिता की हर तीव्रता को संपन्न करना - विशुद्ध करना - दोष रहित करना

यही वात्सल्य है।

जगत के हर बालक को सिंचना

जगत के हर बालक को संस्कृत करना

जगत के हर बालक को समद्रष्टी निहारना

जगत के हर बालक को संरक्षण देना

जगत के हर बालक को तृप्त करना

जगत के हर बालक में श्री प्रभु निहालना

जगत के हर बालक को प्यार बाँटना

जगत के हर बालक को शिस्तता से संवारना

माँ! मेरी माँ! मेरी माँ!

तात! मेरे तात! मेरे तात!

यह वात्सल्य प्रीत है।

यह वात्सल्य भक्ति है।

"Vibrant Pushti"

कितनी धारणा को मानते मानते हम हमारी संस्कृति जानते समझते और पहचानते जाते है।

हमारा मानव जीवन से हमारे पूर्वज ऋषि जो वैदिक मंत्र से,

पौराणिक संज्ञा और ज्ञान आधारित "व्यासजी" और अनेक मानव जीवन समूह मान्यता, धारणा और आविष्कार से,

जो सांप्रदायिक संज्ञा और ज्ञान उर्पाजीत में आचार्य का अभिधान से।

यही परंपरा सदा बहती रही है, यही बहती परंपरा में जो स्वकिय आध्यात्मिक उजागर करने वाले आत्म तत्व से ही हमारी संस्कृति की धरोहर अखंड है। यह धरोहर का सिंचन केवल और केवल भक्ति मार्ग करता है।

यह भक्ति मार्ग क्या है?

भक्ति मार्ग की रचना कैसे और कौन करता है?

भारतीय मानव जीवन सदा यह मार्ग से आकर्षित क्यूँ होता है?

आज का मानव जीवन भक्ति मार्ग को क्या समझते है?

"Vibrant Pushti"

मनुष्य जीवन का प्यार कैसी रीत से, क्या समझ और क्या क्या अनुभव कराता है!

जुदा होने से प्यार अधुरा - प्यार की कहीं समझे - प्यार की कहीं उलझनें - प्यार की कहीं परिस्थिति - प्यार की कहीं असर।

हर व्यक्ति के बिना, हर व्यक्ति की दास्तान निराली।

सच! जीते है - रहते है - सहते है - याद करते है - भूल जाते है - यूँही बहते रहते है।

मर्यादा - रीति रिवाज, जात पात - आदर - सन्मान - छुपा छूपी - हेतु - निजता - क्षणिक - शोख - डर - निडर - उल्लंघन - स्वार्थ - नासमझ - मान्यता - साथ - वचन - बंधन - समर्पण - और अनेक प्रकार की परिस्थिति और अपनाया हुई सोच आदि सत्य रुप है प्यार का?

समाज के हर पहलू को देखले और समझले - क्या प्यार की व्याख्या या अर्थ या समझ ऐसी ही है - जो व्यक्ति प्यार करे वह पस्ताय या दर्द सहे या हैरान हो!

नहीं नही

प्यार की रीत

प्यार की समझ

प्यार की पहचान

प्यार की अनुभूति ऐसी तो नहीँ ही है।

कितनों के संसार उजडे!

कितनों ने प्राण त्यागे!

कितनों ने जान गँवाही!

कितनों तडपते रहे!

कितनों बिछडते रहे!

कितनों झुरते रहे!

कितनों तुट गये!

कितनों बरबाद हो गये!

क्या यही ही समझ है प्यार की?

नहीं नहीं!

यह गलत है

यह नासमझ है

यह असोचनीय है

तो सच क्या है?

सच समझना है

"Vibrant Pushti"

हे उधो ! एक ही मन था - जो जुड़ा प्रियतम संग

"भक्ति भक्त भगवान"

जगत का कोई भी व्यक्ति भक्ति करना चाहता है।

जगत का कोई भी व्यक्ति भगवान या खुदा पाना चाहता है।

यह भक्ति करना और भगवान या खुदा पाना, कैसे?

तो जगत के कहीं संत और संत चरित्र ने कहीं प्रणाली प्रमाणित किया है अपने खुद की अनुभूति से और जगत यही चरित्रों में बाँटकर जिससे जो सही लगे वह अपना कर वही मार्ग पर चलने लगता है।

ऐसी ऐसी रीतों से भक्ति और भगवान स्वरूप प्रकट होते है और वह भक्ति का सिद्धांत और भगवान का रुप हो जाती है।

"भक्ति भक्त भगवान" हमें खुद ही समझना है - खुद ही उजागर होना है - खुद ही सिद्धांत अपनाना है - खुद ही मार्ग पर चलना है।

उन्होंने यह कहा इन्होंने यह कहा मैंने यह अपनाया यही सत्य है सबको ऐसा ही करना ही योग्य है। ऐसे भक्ति नहीं होती ऐसे भगवान नहीं पाये जा सकते।

हमारी मांग हमें सन्मान हमें ही अपनाने से जगत आपको मानेगा, जगत आपके पीछे दौडेगा - नहीं नही।

भक्ति यह नहीं है।

भगवान यह नहीं है।

समझलो!

"Vibrant Pushti"

हिन्दु संस्कृति भक्ति का सागर है और हिन्दुस्थान की हर सरिता भक्ति की धारा है। जो हर धारा से ऋषिओं और भक्तों के बिज को सिंचते सिंचते सारे हिन्दुस्थान को सर्वोच्च और संस्कृत प्रज्ञानी भक्तो से विशुद्ध तेजोमय कर दिया है।

हिन्दुस्थान की चारों ओर भक्ति का झंडा लहरा रहा है। कोई भी स्थली भक्त वात्सल्य से छलकती है।

हमारे वेद, वेदांत, शास्त्रों संस्कृति का प्रमाण है जो हर ऋषि या भक्त की सर्वथा से सामर्थ्य सभर है। युग के हर पन्ने पर भक्ति का स्पर्श है।

आज हर व्यक्ति में भक्ति का अंश प्रमाण से निरुपण पायेंगे ही, यही निरुपणता से हिन्दुस्थान सदा धडकता है। कहीं भिन्न प्रकार से भक्ति बहती है, हर व्यक्ति नाचता झुमता गाता लहराता ही मिलेगा।

हर दिशा, विस्तार, धर्म संप्रदाय भक्ति लूटता और लूटाता नजर आयेगा। भिन्न प्रकार के भक्त तो भिन्न प्रकार भक्ति है, अनेक भिन्नता में एक ही अभिन्नता मिलेगी - वह है सदा साथ रहना।

हर प्रकारकी भक्ति का स्पर्श करके पूर्णता पायेंगे - हमारी भक्ति को पहचान कर अति द्रढ करते जायेंगे!

"Vibrant Pushti"

सर्व धर्म समान रे बंधु है सब एक समान

जीवन जी रहे है कहीं समझो से
जीवन जी रहे है कहीं रीतो से
जीवन जी रहे है कहीं ज्ञान से
जीवन जी रहे है कहीं शिक्षा से
जीवन जी रहे है कहीं भाव से
जीवन जी रहे है कहीं अज्ञात संकेतों से
जीवन जी रहे है कहीं ज्ञात संकेतों से
जीवन जी रहे है कहीं भूलो से
जीवन जी रहे है कहीं श्रद्धा से
जीवन जी रहे है कहीं मान्यता से
जीवन जी रहे है कहीं सहारा से
जीवन जी रहे है कहीं संकल्प से
जीवन जी रहे है कहीं ध्येय से
जीवन जी रहे है कहीं संबंधो से
जीवन जी रहे है कहीं बंधनो से
हाँ! पर
नहीं जीवन जी रहे है केवल खुद की पहचान करने
तो
यह जीवन धकेला जायेगा
एक अन्जान राह पर,
भटक जायेगा अंधेरे विषयों पर,
बिखर जायेगा अंधाधुंध मान्य पर
न खुद जियेंगे न औरों को जीने देंगे
"Vibrant Pushti"

हे विश्वरुपा !

हे निराकार ब्रह्मरुपा !

हे प्रेम परमात्मा !

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - सुबोधीनता

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "